## इकाई - 1

# यादों की बारात में

बारहवीं कक्षा की ऐच्छिक पुस्तक की पहली इकाई है यादों की बारात में। सुदर्शन की कहानी अलबम से इकाई शुरू होती है। इसमें दो ईमानदार व्यक्तियों का चित्रण हुआ है। कहानी परोपकार की भावना को उजागर करती है। इकाई का दूसरा पाठ हिंदी के शोकगीत सरोजस्मृति का मर्मस्पर्शी अंश है। निराला की यह लंबी कविता पुत्री के प्रति पिता के अनन्य प्रेम को दिखाती है। तीसरा पाठ लक्ष्मीकांत झा का निबंध है। खोई हुई वस्तु पुनः मिल जाने पर प्राप्त होनेवाली खुशी इसका केंद्रबिंदु है। आगे का पाठ क्रियाविशेषण के सही प्रयोग को समझाने की कोशिश है। इकाई का अंतिम पाठ हिंदी साहित्य की आधुनिक कालीन कविता यात्रा तथा निबंध यात्रा की विहंगम दृष्टि है।

# अधिगम उपलब्धियाँ

- प्रेमचंदयुगीन कहानी-साहित्य की अवधारणा पाकर शैलीगत विशेषताएँ पहचानता है।
- प्रेमचंदयुगीन कहानी-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर कहानी का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- छायावादी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों की अवधारणा पाकर कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- निबंध की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।
- निबंध के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- क्रिया-विशेषण का प्रयोग संबंधी अवधारणा पाकर प्रयोग करता है।
- हिंदी साहित्य के गद्यकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ पहचानकर प्रस्तुत करता है।

# अलबम

पंडित शादीराम ने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?

वे निर्धन थे; परंतु दिल के बुरे न थे। वे चाहते थे कि चाहे जिस प्रकार भी हो, अपने यजमान - लाला सदानंद - का रुपया अदा कर दें। उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था। अपना पेट काटकर बचाते थे; परंतु जब चार पैसे इकट्ठे हो जाते, तो कोई ऐसा खर्च निकल आता कि सारा रुपया उड़ जाता। शादीराम के हृदय पर बर्छियाँ चल जाती थीं। उनका वही हाल होता था, जो उस डूबे हुए मनुष्य का होता है, जो हाथ-पाँव मारकर किनारे पहुँचे, और किनारा टूट जाए। उस समय उसकी दशा कैसी करुणाजनक, कैसी हृदय-बेधक होती है? वह प्राराब्ध को गालियाँ देने लगता है। यही दशा शादीराम की थी।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गए। शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़ लिए। उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपए देने थे। इस अस्सी रुपए की रकम से ऋण उतरने का समय निकट आता प्रतीत हुआ। आशा धोखा दे रही थी। एकाएक उनका छोटा लड़का बीमार हुआ और लगातार चार महीने बीमार रहा। पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपए दवा-दारू में उड़ गए। पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया। अब चारों ओर फिर अंधकार था। उसमें प्रकाश की हल्की-सी किरण दिखाई न देती थी। उन्होंने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे- क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा?

लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे, और न चाहते थे कि वे रुपए देने का प्रयत्न करें। उन्हें इस रकम की रत्ती-भर भी परवाह न थी। उन्होंने उसके लिए कभी तगादा तक नहीं किया, न कभी शादीराम से इस विषय की बात छेड़ी। इस बात से वे इतना डरते थे, मानो रुपए स्वयं उन्हीं को देने हों; परंतु शादीराम के हृदय में शांति न थी! प्रायः सोचा करते थे कि वे कैसे भले-मानस हैं, जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते? ख़ैर, वे कुछ नहीं करते, सो ठीक है; परंतु इसका तात्पर्य यह थोड़े ही है कि मैं भी निश्चिंत हो जाऊँ।

उन्हें लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस न था। उसे ऋण के बोझ ने नीचे झुका दिया था। यदि लाला सदानंद ऐसी सज्जनता न दिखलाते, और शादीराम को

बराबर तगादा करके तंग करते, तो उन्हें ऐसा मानसिक कष्ट न होता। हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं, परंतु भलेमानसी के सामने आँखें नहीं उठतीं।

*हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं। परंतु भलेमानसी के सामने आँखें नहीं उठतीं। अपना विचार व्यक्त करें।*

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए, और उनकी अलमारी में कई सौ बंगला, हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, "यह क्या है?"

पंडित शादीराम ने पैर के अंगूठे से ज़मीन कुरेदते हुए उत्तर दिया, "पुरानी पत्रिकाएँ हैं। बड़े भाई को पढ़ने का बड़ा चाव था, वे प्रायः मंगवाते रहते थे! जब जीते थे, तब किसी को हाथ तक न लगाने देते थे। अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं!"

"रद्दी में क्यों नहीं बेच देते?"

"इनमें चित्र हैं। जब कभी बच्चे रोने लगते हैं, तो एकाध निकालकर दे देता हूँ। इससे उनके आँसू थम जाते हैं।"

लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, "दो-चार परचे दिखाओ तो।"

पंडित शादीराम ने कुछ परचे दिखाए। हरेक परचे में कई-कई सुंदर और रंगीन चित्र थे। लाला सदानंद कुछ देर तक उलट-पुलटकर देखते रहे। सहसा उनके हृदय में एक विचित्र विचार उठा। चौंककर बोले, "पंडितजी!"

"कहिए?"

"ये चित्र कला-सौंदर्य के अति उत्तम नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो हज़ार, दो हज़ार रुपए कमा लो।"

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस लेकर कहा, "ऐसे भाग्य होते, तो यों धक्का न खाता फिरता।"

लाला सदानंद बोले, "एक काम करो।"

"क्या?"

"आज बैठकर, इन पत्रिकाओं में जितनी अच्छी-अच्छी तस्वीरें हैं, सबको छाँटकर अलग कर लो।"

"बहुत अच्छा।"

"जब यह कर चुकोगे, तो मुझे बता देना।"

"आप क्या करेंगे?"

"मैं इनका अलबम बनाऊँगा, और तुम्हारी ओर से विज्ञापन दे दूँगा। संभव है किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए और तुम चार पैसे कमा लो।"

**2**

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयलों में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने आशा के द्वार चारों ओर से बंद कर दिए थे। वे उन हतभाग्य मनुष्यों में से थे, जो संसार में असफल, और केवल असफल रहने के लिए उत्पन्न होते हैं।

सोने को हाथ लगाते थे, तो वह भी मिट्टी हो जाता था। उनकी ऐसी धारणा ही नहीं, पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न कभी भी सफल न होगा, परंतु लाला सदानंद के आग्रह से दिन-भर बैठकर तस्वीरें छाँटते रहे। न मन में लगन थी, न हृदय में चाव; परंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके। शाम को देखा, दो सौ एक-से-एक बढ़िया चित्र हैं। उस समय उन्हें देखकर वे स्वयं उछल पड़े। उनके मुख पर आनंद की आभा नृत्य करने लगी, जैसे फेल हो जाने का विश्वास करके अपने प्राराब्ध पर रो चुके विद्यार्थी को पास हो जाने का तार मिल गया हो। उस समय वह कैसा प्रसन्न होता है। चारों ओर कैसी विस्मित और प्रफुल्लित दृष्टि से देखता है! यही अवस्था पंडित शादीराम की थी। उन चित्रों की ओर इस प्रकार देखते थे मानो उनमें से प्रत्येक दस-दस रुपए का नोट हो। बच्चों को उधर देखने न देते थे। वे सफलता के विचार में ऐसे प्रसन्न हो रहे थे, जैसे सफलता प्राप्त हो चुकी हो, यद्यपि वह अभी कोसों दूर थी। लाला सदानंद की आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी।

लाला सदानंद ने चित्रों को अलबम में लगवाया, और कुछ उच्चकोटि के समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया। अब पंडित शादीराम हर समय डाकिए की प्रतीक्षा करते रहते थे। रोज़ समझते कि आज कोई चिट्ठी आवेगी। दिन बीत जाता और कोई उत्तर न आता था। रात को आशा सड़क पर धूल की तरह बैठ जाती थी; परंतु दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर बंध जाती थी, जिस प्रकार

गाड़ियाँ चलने से पहले दिन की बैठी हुई धूल हवा में उड़ने लगती है। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुख दिखाकर दरवाज़े पर खड़ा कर देती थी। डाक का समय होता, तो बाज़ार में ले जाती, ओर वहाँ से डाकखाने पहुँचाती थी। इसी प्रकार एक महीना बीत गया; परंतु कोई पत्र न आया। पंडित शादीराम सर्वथा निराश हो गए, परंतु फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जिस प्रकार अंधेरे में जुगनू चमक जाता हैं। यह जुगनू की चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवनदायिनी, कैसी हृदयहारिणी होती है ! इसके सहारे भूले हुए पथिक मंज़िल पर पहुँचने का प्रयत्न करते और कुछ देर के लिए अपना दुःख भूल जाते हैं। इस झूठी आशा के अंदर सच्चा प्रकाश नहीं होता; परंतु यह दूर के संगीत के समान मनोहर अवश्य होती है। इसमें वर्षा की नमी हो या न हो, परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है?

आख़िर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे। कलकत्ता के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि अलबम भेज दो, यदि पसंद आ गया, तो खरीद लिया जाएगा। मूल्य की कोई चिंता नहीं, चीज़ अच्छी होनी चाहिए। यह पत्र उस करवट के समान था, जो सोया हुआ मनुष्य जागने से पहले बदलता है और उसके पश्चात् उठकर बिस्तरे पर बैठ जाता है। यह किसी पुरुष की करवट न थी। यह भाग्य की करवट थी। पंडित शादीराम दौड़े हुए लाला सदानंद के पास पहुँचे, और उन्हें पत्र दिखलाकर बोले, "भेज दूँ?"

लाला सदानंद ने पत्र को अच्छी तरह देखा और उत्तर दिया, "रजिस्टर्ड कराकर भेज दो। शौकीन आदमी है, ख़रीद लेगा।"

"और मूल्य?"

"लिख दो, एक हज़ार रुपए से कम पर सौदा न होगा।"

कुछ दिन बाद उन्हें उत्तर में एक बीमा मिला। पंडित शादीराम के हाथ-पैर काँपने लगे; परंतु हाथ-पैरों से अधिक उनका हृदय काँप रहा था। उन्होंने जल्दी से लिफाफा खोला; और उछल पड़े। उसमें सौ-सौ रुपए के दस नोट थे। पहले उनके भाग्य ने करवट ली थी, अब वह पूर्ण रूप से जाग उठा। पंडित शादीराम खड़े थे, बैठ गए। सोचने लगे, अगर दो हज़ार रुपए लिख देता तो शायद उतने ही मिल जाते। इस विचार ने उनकी सारी प्रसन्नता किरकिरी कर दी।

*उनकी सारी प्रसन्नताओं के किरकिरी हो जाने का कारण क्या था?*

**3**

संध्या के समय वे लाला सदानंद के पास गए, और पाँच सौ रुपए के नोट सामने रखकर बोले, "परमात्मा को धन्यवाद है कि मुझे इस भार से छुटकारा मिला। अपने रुपए सँभाल लीजिए। आपने जो दया और सज्जनता दिखलाई है, उसे मैं मरणपर्यंत न भूलूँगा।"

लाला सदानंद ने विस्मित होकर पूछा, "पंडितजी, क्या सेठ ने अलबम ख़रीद लिया?"

" जी हाँ रुपए भी आ गए।"

"एक हज़ार?" "जी हाँ ! नहीं तो मुझ निर्धन ब्राह्मण के पास क्या था, जो आपका ऋण चुका देता, परमात्मा ने मेरी सुन ली...!"

"मैं पहले भी कहना चाहता था; परंतु कहते हुए हिचकिचाता था कि आपके हृदय को कहीं ठेस न पहुँचे। पर अब मुझे यह भय नहीं है; क्योंकि रुपए आपके हाथ में हैं। मेरा विचार है कि आप ये रुपए अपने पास ही रखें। मैं आपका यजमान हूँ; मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ।"

पंडितजी की आँखों में आँसू आ गए, दुपट्टे से पोंछते हुए बोले, "आप जैसे सज्जन संसार में बहुत थोड़े हैं। परमात्मा आपको चिरंजीवी रखे, परंतु अब तो मैं ये रुपए न लूँगा। इतने वर्ष आपने माँगे तक नहीं, यह उपकार कोई थोड़ा नहीं है ! मुझे उससे उऋण होने दीजिए। ये पाँच सौ रुपए देकर मैं हृदय की शांति ख़रीद लूँगा।"

*निर्धन ब्राह्मण की उदारता और सच्चरित्रता देखकर सदानंद का मनोमयूर नाचने का क्या कारण है?*

निर्धन ब्राह्मण की यह उदारता और सच्चरित्रता देखकर सदानंद का मनोमयूर नाचने लगा। उन्होंने नोट ले लिए। मनुष्य रुपए देकर भी ऐसा प्रसन्न हो सकता है, इसका अनुभव उन्हें पहली ही बार हुआ। पंडितजी के चले जाने पर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं, और किसी विचार में मग्न हो गए। इस समय उनके मुखमंडल पर एक विशेष आत्मिक तेज था।

## 4

छह मास बीत गए। लाला सदानंद बीमार थे। ऐसे बीमार वे सारी आयु में न हुए थे। पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते। वे वैद्य न थे, डॉक्टर न थे, वे ब्राह्मण थे, उनकी औषधि माला फेरनी ही थी, और यह काम वह अपनी आत्मा की पूरी शक्ति, अपने मन की पूरी श्रद्धा से करते थे। उन्हें औषधि की अपेक्षा आशीर्वाद और प्रार्थना पर अधिक भरोसा था।

एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे। उनके पास उनकी बूढ़ी माँ उनके दुर्बल और पीले मुख को देख-देखकर अपनी आँखों के आँसू अंदर ही अंदर पी रही थीं। थोड़ी दूर पर, एक कोने में उनकी नवोढ़ा स्त्री घूँघट निकाले खड़ी थी, और देख रही थी कि कोई काम ऐसा तो नहीं जो रह गया हो। पास में पड़ी हुई एक चौकी पर पंडित शादीराम बैठे रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए।

पंडितजी ने गीता छोड़ दी, और उठकर उनके सिरहाने बैठ गए। स्त्री गरम दूध लेने के लिए बाहर दौड़ी, और माँ अपने बेटे को घबराकर आवाज़ें देने लगीं। इस समय पंडितजी को रोगी के सिरहाने के नीचे कोई कड़ी-सी चीज़ चुभती हुई जान पड़ी। इन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। यह सख्त चीज़ वही अलबम

था, जिसे किसी सेठ ने नहीं, बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने ख़रीद लिया था।

*शादीराम का ऋण पहले से दूना कैसे हो गया?*

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है; परंतु यह जानकर उनके हृदय पर चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं; पहले से दूना हो गया।

उन्होंने अपने बेसुध यजमान के पास बैठे-बैठे एक ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी न उतरेगा?

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया। उन्होंने पंडितजी से अलबम छीन लिया; और धीरे से कहा, "यह अलबम सेठ साहब से अब हमने मँगवा लिया है।"

पंडितजी जानते थे कि यजमानजी झूठ बोल रहे हैं; परंतु वे उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और अधिक ऊँचा समझने लगे थे।

सुदर्शन

सुदर्शन का वास्तविक नाम बदरीनाथ है। उनका जन्म सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में 1896 को हुआ था। उनकी कालजयी रचनाएँ हैं 'हार की जीत', 'सच का सौदा', 'परिवर्तन', 'गुरु मंत्र', 'अंधकार', 'दिल्ली का अंतिम दीपक' आदि। सुदर्शन प्रेमचंद परंपरा के कहानीकार हैं। मध्यवर्ग की सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का विश्लेषण करने में आपको अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। 'सुदर्शन-सुधा', 'सुदर्शन सुमन', 'तीर्थयात्रा' इत्यादि संग्रहों में आपकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। उनका निधन 1967 को हुआ था।

## मेरी खोज

- पाठभाग के किन्हीं दो विशेष प्रयोग छाँटें और नए संदर्भ में उनका प्रयोग करें।

## अनुवर्ती कार्य

- लाला सदानंद के ये कथन पढ़ें,
  - अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाए, तो हज़ार दो हज़ार रुपए कमा लो।
  - मैं आपका यजमान हूँ, मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ।
  - यह अलबम सेठ साहब से अब हमने मँगवा लिया है।
- इन कथनों के आधार पर लाला सदानंद के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

➤ लाला सदानंद अलबम की बिक्री के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देता है। वह विज्ञापन तैयार करें।

## निजी परख

| | पूर्ण | आंशिक | अपूर्ण |
|---|---|---|---|
| सपाट भाषा का प्रयोग है | | | |
| मुहावरेदार/नारेबाज़ी शैली है | | | |
| लाभ और गुणवत्ता का ज़िक्र है | | | |
| रूपरेखा आकर्षक है। | | | |

➤ शादीराम जानता था कि यजमानजी झूठ बोल रहे हैं। परंतु वे उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और अधिक ऊँचा समझने लगे थे। पंडितजी की उस दिन की डायरी लिखें।

**सहायक संकेत**

- अलबम सिरहाने पर देखना
- सेठ के प्रति बढ़ता आदर
- कर्ज़ न चुका सकने पर आत्मग्लानि

## प्रसंगार्थ

| | | |
|---|---|---|
| मोहर | - | सोने का सिक्का |
| परवाह | - | ध्यान, चिंता |
| निश्चिंत | - | चिंता रहित |
| भले मानस | - | अच्छा आदमी |
| रद्दी | - | काम न आनेवाली चीज़ |
| परचा | - | पन्ना |
| चाव | - | रुचि |
| शौकीन | - | शौक रखने वाला |
| कोयला | - | Coal |
| हीरा | - | रत्न |
| छाँटना | - | काटकर अलग करना |
| करवट | - | दाएँ और बाएँ लेटने की स्थिति |
| आभा | - | शोभा, चमक |
| सौदा | - | व्यापार |
| छुटकारा | - | मुक्ति |
| चौकी | - | कुर्सी, छोटा तख्त |
| दूना | - | दुगुना |

## विशेष प्रयोग

| | | |
|---|---|---|
| ठंडी साँस भरना | - | दुःख की लंबी साँस भरना, आह भरना |
| अदा करना | - | चुकाना |
| बछियाँ चल जाना | - | अधिक दुःख हो जाना |
| तगादा करके तंग करना | - | माँग करके उपद्रव करना |
| ज़मीन कुरेदना | - | ज़मीन खोदना |
| आँसू थम जाना | - | आँसू रुक जाना, आँसू बंद हो जाना |
| टाल न सका | - | हटा न सका |
| ठेस पहुँचाना | - | चोट पहुँचाना |
| धक्का खाना | - | आघात लगना |

# सरोज स्मृति

फिर आई याद - "मुझे सज्जन
है मिला प्रथम ही विद्वज्जन
नवयुवक एक, सत्साहित्यिक
कुल कान्यकुब्ज, यह नैमित्तिक
होगा कोई इंगित अदृश्य,
मेरे हित है हित यही स्पृश्य
अभिनंदनीय।" बँध गया भाव
खुल गया हृदय का स्नेह-स्राव,
खत लिखा, बुला भेजा तत्क्षण,
युवक भी मिला प्रफुल्ल, चेतन।
बोला मैं- 'मैं हूँ रिक्त-हस्त
इस समय, विवेचन में समस्त-
जो कुछ है मेरा अपना धन
पूर्वज से मिला, करूँ अर्पण
यदि महाजनों को तो विवाह
कर सकता हूँ, पर नहीं चाह
मेरी ऐसी, दहेज देकर
मैं मूर्ख बनूँ यह नहीं सुघर,
बारात बुलाकर मिथ्या व्यय
मैं करूँ नहीं ऐसा सुसमय।
तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथम,
लग्न के; पढ़ूँगा स्वयं मंत्र
यदि पंडितजी होंगे स्वतंत्र
जो कुछ मेरे, वह कन्या का,
निश्चय समझो, कुल धन्या का।'

*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

*सरोज-स्मृति हिंदी साहित्य का शोक गीत है। अपनी प्रियपुत्री सरोजा की असामयिक मृत्यु पर निराला की हृदयभेदक व्यथा कविता के रूप में निकली। खुद निराला बड़े दानी थे। ज़रूरतमंदों को वे बिन माँगे पैसा देते थे। परंतु अपनी बेटी की बीमार हालत में धन के अभाव में वे कुछ न कर सके। प्रस्तुत कविता में वे बार-बार पुकार उठे - "धन्ये! मैं पिता निरर्थक था। कुछ भी तेरे हित न कर सका।" प्रस्तुत भाग में अपनी बेटी के लिए वर खोजनेवाले एक पिता का दृश्य है।*

छायावाद के चार स्तंभों में से एक, नवगीत के प्रवर्तक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' थे। उनका जन्म 1896 ई. में मिथिनापुर, बंगाल में हुआ था। कबीर के बाद हिंदी के सबसे क्रांतिकारी कवियों में उनका स्थान है। प्रकृति के प्रति समभावना और सर्वहारा के प्रति समानुभूति उनकी कविताओं की विशेषता रही। प्रमुख रचनाएँ- 'परिमल', 'गीतिका', 'अणिमा', 'सांध्यकाकली', 'अपरा', 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज स्मृति' आदि हैं। उनका निधन 1961 ई. में हुआ था।

## मेरी खोज

➤ कविता से तत्सम शब्द छाँटकर लिखें।

## अनुवर्ती कार्य

➡ आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।

➡ "पर नहीं चाह
मेरी ऐसी, दहेज देकर
मैं मूर्ख बनूँ" - यहाँ कवि की प्रगतिशील विचारधारा प्रकट होती है। लेकिन आज भी दहेज की समस्या समाज का शाप है। इसपर संगोष्ठी चलाएँ और आलेख तैयार करें।

## एक नज़र

हिंदी के बहुचर्चित क्रांतिकारी कवि हैं, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। बेटी की शादी के संबंध में कवि के मन में यह दुविधा पैदा हुई थी कि परंपरा के अनुसार वर को ढूँढ़ना है या विद्वान को चुनना है। आख़िर कवि ने विद्वान को बुलाया और उनसे कहा 'मैं परंपरा के अनुसार दहेज नहीं देना चाहता हूँ'। कवि की आर्थिक स्थिति भी इसके अनुकूल नहीं है। कवि सभी सामाजिक परंपराओं और नियमों का अतिक्रमण करने केलिए तैयार हो जाते हैं और उन्होंने यह भी कहा कि मेरी पुत्री वंश की गरिमा बढ़ाएगी।

## प्रसंगार्थ

| | | |
|---|---|---|
| विद्वज्जन | - | पंडित |
| चेतन | - | चुस्त |
| रिक्त | - | ख़ाली |
| महाजन | - | धनी |
| दहेज | - | वरदक्षिणा, Dowry |
| सुघर | - | अच्छा |
| बारात | - | वर-यात्रा |

# खोई हुई वस्तु की खोज

मेरी वस्तुएँ बहुधा खो जाती हैं। लोग कहते हैं, तुम बड़े असावधान हो, इसलिए तुम्हारी वस्तुएँ खोती रहती हैं। यदि तुम थोड़ा सावधान रहो, अपनी वस्तुओं को ठिकाने से सहेजकर रखो तो तुम्हें जब देखो तब चिंतित न होना पड़े।

मैं मानता हूँ कि कभी-कभी वस्तु के खो जाने से विशेष कष्ट होता है। कभी-कभी भोज में जी खोलकर भोजन करने से अपच भी हो जाता है। फिर भी हम भोजन को ठूँसना नहीं छोड़ते। इसी प्रकार हम खो जाने के भय से वस्तुओं को ठिकाने से रखने की चिंता नहीं करते। आपने 'सौ वर्ष जीने का' अथवा 'अमर होने' का उपाय किसी-न-किसी पुस्तक में अवश्य पढ़ा होगा। आपने विचार करके देखा होगा कि अमर होने के लिए मनुष्य को ऐसे उपायों का अवलंबन करना पड़ेगा कि उसका जीवन ही भार-सा हो जाएगा। मुझे यदि उन उपायों का पालन साल-भर भी करना पड़े तो मैं आत्महत्या करने पर उतारू हो जाऊँ, फिर सौ वर्ष अथवा अनंत काल तक जीने की तो बात ही छोड़ दीजिए। हाँ, तो आप जिस प्रकार इन पुस्तकों में वर्णित दीर्घायु-प्राप्ति के उपायों की चेष्टा नहीं करते, उसी प्रकार मैं भी अपनी वस्तुओं को संभालने के विषय में उपदेश सुनकर भी नहीं सुनता।

*लेखक अपनी वस्तुओं को संभालने के विषय में उपदेश सुनकर भी नहीं सुनता, क्यों?*

जो लोग ऐसे उपदेश देते हैं, उनपर मुझे दया आती है, क्रोध नहीं। पर कुछ लोग हैं जिनपर मुझे क्रोध आता है। उदाहरण लीजिए: आप कार्यालय अथवा कॉलेज जा रहे हैं। ठीक चलते समय सहसा आप देखते हैं  कि जेब में पेंसिल नहीं है। आपने अपनी कोठरी में ढूँढ़ना आरंभ किया। बड़ी चौकसी-से अपनी कोठरी का कोना-कोना छान डाला। इसी समय आपका पुत्र या भाई आकर पूछता है:

'क्या ढूँढ़ रहे हैं?'

'पेंसिल ढूँढ़ रहा हूँ।

'जेब में नहीं है क्या?'

अब आप ही सोचिए कि जेब में पेंसिल रहने पर चारपाई के नीचे घुसकर कोई थोड़े ही पेंसिल ढूँढ़ता है। वह फिर कहता है, 'मेज़ पर देखो'

यदि इस बात पर भी आपको क्रोध न आए तो आप संसार में रहने योग्य नहीं है। आप कुछ बोलना ही चाहते हैं कि आपकी आँख घड़ी पर पड़ती है। आप देखते हैं कि बहुत विलंब हो गया है। ऐसे समय विवाद करना अच्छा नहीं। इसी समय पुत्र या भाई किसी काम से बाहर जाता है। आप पेंसिल के ढूँढ़ने का भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। दो मिनट के पश्चात् पुत्र या भाई आकर फिर पूछता है, 'अब भी पेंसिल नहीं मिली?'

आप इस बार भी क्रोध को दबाए रहे । फिर दूसरा प्रश्न 'कहीं कोट में तो नहीं रही? उसे तो अम्मा ने धोबी के यहाँ भेज दिया।'

'नहीं, मैंने आज, नहीं अभी, आधा घंटा पहले उससे लिखा है। बैंजनी रंग की पेंसिल थी। चार आने की थी।'

'अरे, ठीक याद आया। उसे मैं पानी में भिगोकर टीका लगाने ले गया था। अभी लाया।' यह कहकर पुत्र या भाई चला जाता है। ऐसे समय आपके मन की दशा कैसी होगी, यह आप स्वयं अनुमान कर ले।

एक बार मैंने नई पुस्तक मोल ली। दूसरे दिन घर का कोना-कोना छान डाला। रसोई-घर भी न छोड़ा। घर-भर के सभी लोगों ने हलचल मचा दी। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कई दवातें उड़ेल दीं, औषधि की शीशियाँ फोड़ दीं, जिन पत्रों का उत्तर देना रह गया था, उन्हें पुरानी चिट्ठियों में और जो पुरानी थीं उन्हें नई चिट्ठियों में मिला दिया; पुस्तकों की पेटियों में कपड़े और कपड़े की पेटियों में पुस्तकें डाल दीं। सब कुछ किया, पर पुस्तक न मिली। परीक्षा निकट थी। फिर दूसरी पुस्तक मोल लेने लपका। कुछ दूर जाने पर मन में आया कि एक बार फिर घर में जाकर खोज आऊँ। लौट आया। ऊधम और हलचल फिर दूसरी बार हुई। अंत में निराश होकर फिर दुकान गया। पुस्तक-विक्रेता ने कहा, 'वाह! आप भी बड़े विचित्र जीव हैं। कल पुस्तक ली थी, दाम दिए और पुस्तक यहीं छोड़कर चलते बने।'

यह सुनकर मेरे मन में जो प्रसन्नता हुई उसके लिए मैं कुछ रुपए भी व्यय करने को प्रस्तुत-सा हो गया।

*'मैं कुछ रुपए भी व्यय करने को प्रस्तुत-सा हो गया' लेखक ऐसा क्यों सोचता है?*

*लेखक किसी नए नगर में जाते वक्त पथ-प्रदर्शक को क्यों नहीं लेते हैं?*

जब आप किसी नए नगर में जाते हैं, तब अपने साथ पथ-प्रदर्शक ले सकते हैं, अथवा गलियों में भटकते हुए चक्कर काट सकते हैं। मुझे तो चक्कर काटना ही भाता है। ऐसा करने में आपको कुछ परिश्रम अवश्य पड़ेगा पर दिन-भर अपने डेरे के दस ही पग आगे से बीसों बार निकल जाने के पश्चात् सहसा अपने निवास स्थान पर पहुँचने में कितना आनंद होता है, इसे सब नहीं जानते। दूसरा लाभ यह है कि कुछ भटकने से आपको नगर भी देखने को मिल जाता है। मैंने बहुधा देखा है कि किसी खोई वस्तु को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कोई पहले की खोई हुई वस्तु भी मिल जाती है। उस समय मन में कितना आनंद होता है! इस आनंद का अनुभव सभी लोग नहीं कर सकते। जिनके यहाँ सभी काम नियम और क्रम से होते हैं, जो अपने घर की सभी वस्तुओं पर कारागार के बंदियों की नाई संख्या देकर रखते हैं, उनके लिए तो यह आनंद असंभव ही है।

यह आनंद इसलिए नहीं होता कि खोई हुई वस्तु के बिना हमारा काम नहीं चलता, अथवा वह मूल्यवती होती है। एक बार एक सज्जन ने मुझसे डाकघर से फाउंटेनपेन ले लिया। इसके पश्चात् वे मुझे आज तक कहीं दीख भी न पड़ें। फाउंटेनपेन के लिए मुझे दुख तो अवश्य हुआ, पर उससे कहीं अधिक दुख उसके कारण मित्र खो जाने से हुआ। नई पेंसिल खो जाने से अधिक दुख होता है। यदि मुझे वह फाउंटेनपेन मिल भी जाए तो उतना आनंद न होगा, जितना किसी खोई पेंसिल के मिलने से

होता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि डाकघर से निकलते ही मैंने फाउंटेनपेन की आशा छोड़ दी, पर खोई हुई वस्तु के लिए तो 'जब तक साँस तब तक आस' रहती है।

*'जब तक साँस तब तक आस' इससे क्या तात्पर्य है?*

यदि आपने कभी इस अनुभव का आनंद नहीं लिया तो एक बार अवश्य परीक्षा करके देखिए।

*- लक्ष्मीकांत झा*

## मेरी खोज

➤ निम्नलिखित कथन किसका है?

- ✸ पेंसिल ढूँढ़ रहा हूँ।
- ✸ अब भी पेंसिल नहीं मिली?
- ✸ अभी आधा घंटा पहले उससे लिखा है।
- ✸ उसे मैं पानी में भिगोकर टीका लगाने ले गया था।
- ✸ वाह! आप भी बड़े विचित्र जीव हैं।

## अनुवर्ती कार्य

➤ खोई हुई पुस्तक लेखक को दुकान में मिली। दुकानदार और लेखक के बीच में हुए संभावित वार्तालाप तैयार करें।

➤ मान लें, पुस्तक खो जाने और मिलने की घटना को लेकर परीक्षा के बाद लेखक अपने मित्र के नाम पत्र लिखता है। वह पत्र तैयार करें।

## प्रसंगार्थ

| | | |
|---|---|---|
| ठिकाने से | - | Arrangement |
| सहेजना | - | सँवारना, to put in order |
| अपच | - | अजीर्ण |
| ठूँसना | - | कसकर भरना, to cram |
| चौकसी | - | सतर्कता, सावधान |
| बैंजनी | - | बैंगनी |
| टीका लगाना | - | तिलक लगाना |
| हलचल मचाना | - | शोर मचाना |
| छान डालना | - | तलाश करना |
| फोड़ना | - | तोड़ना |
| लपकना | - | दौड़ना |
| भटकना | - | इधर-उधर घूमते फिरना |
| डेरा | - | टिकाव, camp |
| की नाई | - | के समान |
| आस | - | कामना, आशा |

# क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।
इसके चार भेद हैं -
स्थान वाचक, काल वाचक, रीतिवाचक, परिमाण वाचक

## स्थान वाचक

- स्थिति - पास, दूर, भीतर, यहाँ, कहाँ, आस-पास...
- दिशा - आगे, पीछे, सामने, दाहिने, इधर, उधर...

## काल वाचक

- समयवाचक - आज, कल, कभी-कभी तत्काल, बार-बार
- अवधिवाचक - सदा, नित्य, हमेशा
- पौनःपुन्यवाचक - फिर, पुनः, प्रायः

## रीतिवाचक

- प्रकार बोधक - ऐसे, वैसे, जैसे
- निश्चय बोधक - ज़रूर, अवश्य
- अनिश्चय वाचक - शायद, कदाचित
- कारण बोधक - क्यों, इसलिए
- अवधारण - यहाँ तक, अब तक, सिर्फ
- निषेध वाचक - नहीं, मत, कभी
- प्रश्न वाचक - क्यों, कहाँ, कैसे

## परिमाणवाचक

- अति, अत्यंत, थोड़ा, बहुत

## अनुवर्ती कार्य

- 'अलबम' कहानी से क्रिया की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्दों को रेखांकित करें।

  जैसे : उधर देखने, पश्चात् उठाकर, नहीं करते, इतना डरते

- रेखांकित शब्दों को सही खंभे में भरें।

| स्थिति और दिशा को सूचित करनेवाले शब्द | समय, अवधि और पौनः को सूचित करनेवाले शब्द | प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, कारण, अवधारण, निषेध और प्रश्न को सूचित करनेवाले शब्द | मात्रा को सूचित करनेवाले शब्द |
|---|---|---|---|
| | | | |
| स्थान वाचक | काल वाचक | रीति वाचक | परिमाण वाचक |

# साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य का आधुनिक युग खड़ीबोली गद्य के विकास-संस्कार और विविध प्रयोगों का युग है। प्रतिभाओं ने अभिव्यक्ति के लिए नए-नए रूपों और प्रयोगों को जन्म दिया। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से इन विधाओं को अधिक बढ़ावा मिला। कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र आदि विधाओं में पर्याप्त रचनाएँ हुईं। इसलिए इस काल को पंडित रामचंद्र शुक्ल ने 'गद्य काल' कहा। खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए 1805 ई. में फोर्ट विलियम कालेज में भाषा विभाग खोला। लल्लूलाल और सदल मिश्र के नेतृत्व में खड़ीबोली गद्य को शिक्षा का माध्यम बनाने की कोशिश की गई। लल्लूलाल ने 'प्रेमसागर', 'बैताल पच्चीसी', 'सिंहासन बत्तीसी' नामक ग्रंथों से, सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' से, इंशा अल्लाखाँ 'रानी केतकी की कहानी' से, मुंशी सदा सुखलाल 'सुखसागर' से खड़ीबोली हिंदी का श्रेय बढ़ाने लगा। ईसाई मिशनरियों ने भी 'बाइबिल' का अनुवाद करके, छापा खाना खोलकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजा राममोहन राय का 'ब्रह्मसमाज' स्वामी दयानंद सरस्वती के 'आर्यसमाज' का भी विशेष योगदान रहा। 'सत्यार्थ प्रकाश' खड़ीबोली गद्य की क्षमता का प्रमाण है। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद', और राजा लक्ष्मण सिंह ने भी खड़ीबोली गद्य के विकास में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। स्वतंत्रता-आंदोलन की

मुख्य भाषा का गौरव खड़ीबोली हिंदी को ही मिला था। साहित्यिक-सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी गद्य के स्वरूप को निखारने और नव-जागरण की चेतना को साधारण जनता तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हुआ।

## भारतेंदु युग

भारतेंदु के आगमन के साथ हिंदी गद्य का एक नया युग आरंभ होता है, जिसे हिंदी साहित्य का आधुनिक काल कहते हैं। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि इस काल के प्रमुख और उल्लेखनीय साहित्यकार हैं। भारतेंदु ने नाटक, जीवनी, यात्रा विवरण, निबंध, समालोचना आदि अधिकांश विषयों पर अपनी लेखनी सफलता पूर्वक चलाई है।

## द्विवेदी युग

खड़ीबोली गद्य के विकास के इतिहास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से सुरुचिपूर्ण, परिष्कृत तथा व्याकरण सम्मत भाषा पर समुचित ज़ोर दिया। इस युग में निबंध के साथ कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि महत्वपूर्ण गद्य विधाओं का भी पूर्ण विकास हुआ। पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्ण सिंह, श्यामसुंदरदास, पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी, प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल आदि अनेक महत्वपूर्ण गद्यकार हैं।

## छायावाद और छायावादोत्तर युग

हिंदी गद्य के विकास में छायावादी कवियों का योगदान भी पर्याप्त महत्वपूर्ण है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा,

रामकुमार वर्मा आदि ने गद्य को लाक्षणिक मूर्तिमता से युक्त कर नई भंगिमा प्रदान की। प्रगतिवादी -प्रयोगवादी और स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी गद्य का बहुमुखी विकास हुआ है। जैनेंद्र, अज्ञेय के चिंतनप्रधान और पाश्चात्य भंगिमा से प्रभावित गद्य एक तरफ़ है तो दूसरी तरफ़ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की गद्य शैली है जो संस्कृत साहित्य की छटा के साथ लोक जीवन के सहज प्रवाह को समाहित किए हुए हैं। इस परंपरा को बढ़ाने में विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि गद्य लेखकों का विशेष योगदान है।

## निबंध साहित्य

तमाम साहित्य-विधाओं के बीच निबंध ही सबसे विलक्षण है। निबंध सबसे लचीली विधा है जिसकी सीमाएँ अन्य विधाओं में छायांतरित होती हैं। ऑक्सफोर्ड कोश में निबंध को 'शैली की दृष्टि से बहुत कुछ विस्तारपूर्ण, किंतु परिसर की दृष्टि से सीमित रचना' कहा गया है।

वस्तुतः हिंदी में निबंध का विकास पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित होकर हुआ। यही कारण है कि हिंदी निबंध भारतेंदु से पूर्व दिखलाई नहीं पड़ता।

## मेरी खोज

- आधुनिक हिंदी साहित्य के आरंभकालीन लेखक और उनकी रचनाओं को सूचीबद्ध करें।

  जैसे: लल्लूलाल - प्रेमसागर

- आधुनिक काल में विकसित विविध गद्य विधाओं को सूचीबद्ध करें।

## अनुवर्ती कार्य

- आधुनिक काल के निबंध साहित्य पर टिप्पणी लिखें।
- आधुनिक काल गद्य काल कहा जाता है। इसपर परिचर्चा चलाएँ और आलेख तैयार करें ।

## निजी परख

| | पूर्ण | आंशिक | अपूर्ण |
|---|---|---|---|
| उपक्रम है। | | | |
| सभी बिंदुओं को विकसित करके अपना मत प्रकट किया है। | | | |
| अपने मत का समर्थन किया है। | | | |
| उपसंहार है। | | | |

## प्रसंगार्थ

प्रशासक - प्रशासन करनेवाला, administrator
सहूलियत - सुविधा, convenience
छापा खाना - मुद्रणालय, press
छटा - सौंदर्य
लचीला - लचलचा, flexible